Department of Philosophy
D. B. COLLEGE, JAYNAGAR, MADHUBANI (BIHAR)
(A Constituent unit of L. N. Mithila University K. Nagar, Darbhanga)
Paper III, Indian Logic (BA Part II Honours)

By:- Dr. Kumar Sonu Shankar
Assistant Professor (Guest)
kumar999sonu@gmail.com
8210837290, 8271817619
Lacture No. 06, Oct.
October 13, 2020

BA Part II Honours

ज्ञान के स्वतंत्र साधन के रूप में अनुमान

कुछ भारतीय दार्शनिक, विशेषतः है चार्वाक, अनुमान को स्वतंत्र प्रमाण की कोटि में नहीं रखते। अनुमान को स्वतंत्र प्रमाण स्वीकृत करने में मुख्यतः दो प्रकार की आपत्तियां उठाई जाती है। प्रथमतः तो अनुमान की प्रमाण रूप में स्वतंत्रता सत्ता पर आपत्ति करते हुए यह कहा जाता है कि '**अनुमान समृति है**' तथा दूसरा आक्षेप इस आधार पर किया जाता है कि '**अनुमान प्रत्यक्ष है**'। अब क्रमानुसार इन आपत्तियों की चर्चा यहां करेंगे।

(1) अनुमान स्मृति है :--

अनुमान प्रमाण की विरोधी अनुमान को प्रमा का साधन नहीं मानते क्योंकि उनके अनुसार अनुमान एक प्रकार की स्मृति है। अपने कथन के पक्ष में प्रमाण देते हुए अनुमान प्रमाण के ये विरोधी यह कहते हैं कि चूंकि अनुमान का आधार व्याप्ति है और व्याप्ति के लिए पूर्व प्रत्यक्ष पर निर्भर करना पड़ता है अतः अनुमान एक प्रकार की स्मृति है। वेदांत परिभाषा में इस आपत्ति का उत्तर देते हुए कहा गया है कि यद्यपि व्याप्ति पूर्व अनुभव की स्मृति पर आधारित है तथापि स्मृति और अनुमान में भेद है। स्मृति के लिए मात्र पूर्व प्रत्यक्ष की आवश्यकता होती है किंतु अनुमान के लिए केवल पूर्व प्रत्यक्ष ही पर्याप्त नहीं है। यहां विभिन्न पदों की परस्पर तुलना, उपनय आदि की भी आवश्यकता होती है।

आशुबोधिनी में भी स्मृति से व्याप्ति का भेद दिखाते हुए कहा गया है कि स्मृति विशेष वस्तुओं या विशेष घटनाओं की होती है जबकि व्याप्ति एक सामान्य वाक्य है। पर्वत पर अग्नि की स्मृति हो सकती है पर 'जहाँ-जहाँ धुआँ है, वहाँ-वहाँ आग है'-- इस सामान्य वाक्य का या व्याप्ति की स्मृति नहीं हो सकती क्योंकि पर्वत की अग्नि का प्रत्यक्ष तो संभव है परंतु 'जहाँ-जहाँ धुआँ है, वहाँ-वहाँ आग है' इसका प्रत्यक्ष संभव नहीं है।

(2) अनुमान प्रत्यक्ष है :--

अनुमान के विरोधी अनुमान को स्वतंत्र प्रमाण के रूप में अस्वीकार करते हुए कहते हैं कि अनुमान एक प्रकार का प्रत्यक्ष है।

किंतु अनुमान को प्रत्यक्ष भी नहीं समझना चाहिए। नैय्यायिक उद्योतकर ने प्रत्यक्ष और अनुमान का अंतर स्पष्ट करते हुए लिखा है कि प्रत्यक्ष में किसी पूर्वज्ञान, किसी

By:- Dr. Kumar Sonu Shankar
Assistant Professor (Guest)
kumar999sonu@gmail.com
8210837290, 8271817619

व्यक्ति अथवा किसी माध्यम की आवश्यकता नहीं होती। यह ज्ञान और अव्यवाहित होता है। किंतु अनुमान एक प्रत्यक्ष पर आश्रित व्यवहित ज्ञान है जो जाति के बिना संभव नहीं है। पुनः प्रत्यक्ष से मात्र इंद्रियगोचर विषयों का ही ज्ञान हो सकता है तथा इसकी सीमा मात्र वर्तमान काल है। किंतु अनुमान से वैसे पदार्थों का भी ज्ञान हो संभव है जो कदापि इंद्रियगोचर नहीं है। साथ ही अनुमान का विस्तार भूत, भविष्य और वर्तमान तीनों कालों में है। अतएव अनुमान प्रत्यक्ष नहीं है।